वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

सितम्बर 2019

* हम अपनी धर्म समाज के लिए कैसे हानिकारक बन जाते हैं?
* पशु व्रत के दिन पर एक उपदेश का भाग
* मनुष्य की परम आवश्यकता को पूरा करने वाले सच्चे नेता
* मेरे श्रद्धेय दादा जी और मेरी श्रद्धेय बड़ी बुआ जी
* सेवक उत्सव
* अमरीका में शुभ संग्राम
* अपने अनुभव

एक साल में कितना विकास किया....?

पलटकर देखिए कि एक साल पहले इस दिन में आपने क्या सीखा, व्यक्तित्व में क्या बेहतरी लाए, कितने दोस्त बढ़े, कितने नाते मजबूत हुए। अगर सूरते हाल कुछ बेहतर न लगे, तो आज से अगले छह महीनों के लिए खुद को चंद सूत्रों के पालन से बदलाव के लिए तैयार कर लीजिए।

हम कुछ मददगार सुझाव लेकर आए हैं जिसके अनुसार चलकर आप छह महीनों में खुद में अंतर देख सकेंगे कि आपके मन ने, आपके व्यवहार ने और इनकी मदद से आपने जीवन में बदलाव का सुखद सफर तय किया है।

अपने कम्फर्ट ज़ोन से बाहर कुछ नया शुरु करें :- मिसाल के तौर पर जिम जाना या व्यायाम का कोई भी नया नियम। इससे सब बचना चाहते हैं। लेकिन सेहतमंद जीवन की नींव इन्हीं आधारों पर खड़ी होती है। कहते हैं न, ज़िंदगी कम्फर्ट ज़ोन के बाहर से शुरू होती है। कुछ नया सीखिए।

बेहतर कल के लिए आरामतलबी को त्याग दीजिए।

पहले समझें, फिर समझे जाने की मांग करें :- आगे बढ़-बढ़कर अपनी बात रखना बुरा नहीं, लेकिन पहले दूसरे की सुन तो लें। यह नियम हर परिस्थिति पर लागू होता है। समझ लीजिए और फिर समझे जाने के लिए अपनी पहल शुरू कीजिए।

ग़लतफहमियां पहले समझे जाने की होड़ से ही होती है।

हर रोज़ किसी न किसी बात के लिए शुक्रगुज़ार रहें :- इच्छाएं और शिकायतें ख़त्म नहीं होती। जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए इस आदत को छोड़ना होगा। जो भी मिला है उसके लिए शुक़्रगुज़ार रहें। आपके पास छोटा घर है या किराए के घर में रहते हैं तो दुखी होने की बजाय ये सोचें कि आपके पास घर तो है।

छोटी -सी खुशी की कीमत समझना शुरू करें।

खुशदिली बड़ी संक्रामक होती है :- जो भी नकारात्मक या ग़लत बात करे, उससे दूरी बनाने में ही भलाई है। ऐसे लागों से मेलजोल रखें जो कि सकारात्मक और खुशमिजाज़ हों ताकि आपकी ज़िंदगी में ही अच्छे बदलाव हों।

नकारात्मकता पीछे खींचती है। उसे छोड़ दें। तभी आगे बढ़ पाएंगे।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 9
सितम्बर 2019
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

हम अपनी धर्म समाज के लिए कैसे हानिकारक बन जाते हैं?

साथियो! क्योंकि वही समाज धर्म समाज हो सकती है कि जिसकी शिक्षा एक ओर नेचर के सच्चे नियमों और उसकी सच्ची घटनाओं पर आधारित हो और दूसरी ओर वह अपने मैंबरों को जीवनों में उनकी योग्यता के अनुसार सच्चे अर्थों में उच्च परिवर्तन लाने के हेतु हो। इसलिए इस पैमाने के अनुसार एक देव धर्म ही सच्ची धर्म समाज है और हो सकती है। इसके भिन्न नेचर के सत्य नियमों और उसकी सत्य घटनाओं के विरुद्ध इस पृथ्वी पर जितने प्रकार के कहलाने वाले "धर्म मत" प्रचलित हैं, वह सब के सब पूर्ण झूठे हैं। इन झूठे मतों के आधार पर जो समाज वा सोसाइटियां बनाई गई हैं, वह सच्ची समाजें वा सोसाईटियां हरगिज़ नहीं हो सकती। इस धर्म समाज का जिन जिन को अंग बनने का सौभाग्य प्राप्त हो जाए, वह निश्चय सौभाग्यवान जन है। अब जहां तक एक तरफ इस सौभाग्य की जिम्मेदारी को ठीक ढंग से पूरा करने के लिए किसी जन के लिए बेहद बरकतों का भण्डार खुल जाता है और खुल सकता है, वहां दूसरी तरफ इस सौभाग्य की बेकदरी करने से उस जन के लिए वह वह तबाही पैदा होती है और हो सकती है, जो और किसी प्रकार भी नहीं हो सकती। इसलिए ऐसी महाहितकर समाज का अंग बनकर एक-एक जन अपनी जिन-जिन नीच गतियों के द्वारा अपने लिए और उसके लिए महा हानिकारक वजूद सिद्ध होता है और हो सकता है, इसके सम्बन्ध में सही जानकारी पाने और उनसे मुक्त होने के योग्य बनना धर्म समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए अति आवश्यक है।

धर्म समाज के सदस्यों की जो जो नीच गतियां उसके लिए व अपनी धर्म समाज के लिए विशेषकर हानिकारक बनती हैं और बन सकती हैं, वह मोटे तौर पर यह हैं :-

1) **स्वार्थ का महा नीच भाव** :-साधारणत: एक एक मनुष्य जन्म काल से ही स्वार्थ की बहुत प्रबल प्रकृति लेकर पैदा होता है। वह जिस प्रकार माता पिता, भाई बहन और पति पत्नी आदि के सम्बन्ध में अपनी एक या दूसरी सुख लालसाओं की तृप्ति चाहता है और मुख्य तौर पर वह अपने स्वार्थ के कारण उन सम्बन्धों में बन्धता है, उसी प्रकार धर्म समाज में आकर उसकी यह लालसा रहती है कि धर्म समाज भी उसकी एक वा दूसरी सुख लालसा को पूरा करने का साधन बने, अर्थात् यदि उसको नौकरी की आवश्यकता

है, तो उसको प्राप्त करने में उसकी सहायता करे, यदि उसको कर्ज़ा लेने की आवश्यकता है, तो धर्म समाज से उसको कर्ज़ा मिल जावे, यदि उसको किसी रोग या मुकद्दमे में सहायता की आवश्यकता है तो धर्म समाज से उसको वह सहायता मिल जावे, यदि उसे अपनी या अपनी सन्तान की शादी की आवश्यकता है, तो उसमें उसकी सहायता हो जाए, यदि उसे मकान, खाने-पीने या कोई वस्तु या किसी कपड़े, किसी सवारी और पुस्तक आदि की आवश्यकता है, तो इस सम्बन्ध में समाज से उसे मुफ्त सहायता मिल जावे। यह सब इच्छाएं स्वार्थ की इच्छाएं हैं। जो जन इन इच्छाओं को रखकर धर्म समाज से सम्बन्ध बनाता है, या बनाना चाहता है, वह ऐसी अवस्था रखकर, स्वयं भी दिन पर दिन नीच बनता है और धर्म समाज के लिए भी हानिकारक सिद्ध होता है। उसे धर्म समाज के साथ सम्बन्ध इस आधार पर रखने की आवश्यकता है कि उस धर्म समाज के भीतर भगवान देवात्मा के देव प्रभावों के द्वारा जो कार्य हो रहा है, वह संसार में सबसे आला कारज है, इसलिए किसी भी भले मनुष्य का यह मुख्य कर्त्तव्य है कि वह ऐसे उच्च कोटि के काम का साथी बने और उसमें सेवाकारी हो। दूसरा, धर्म समाज के भीतर भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का जो वास्तविक रूप में कार्य हो रहा है, वह उसके आत्मा की भलाई व रक्षा व उन्नति के लिए जान और प्राण की चीज़ हैं। इसलिए उनके देव प्रभावों की प्राप्ति के निमित उसको धर्म समाज के साथ अपना गहरा सम्बन्ध अनुभव करने की आवश्यकता है। यह सत्य है कि इस प्रकार के उच्च भावों के आधार पर धर्म समाज के साथ सम्बन्ध स्थापन होने से एक-एक अधिकारी मनुष्य को आत्मिक बेबहा लाभों के अतिरिक्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक कई प्रकार की और बेबहा बरकतें भी बहुत कुछ मिलती हैं, परन्तु उसके सामने मुख्य रूप से आत्मिक लाभ ही मुख्य होना चाहिए। जो जन इसके विरुद्ध चलते हैं, वह जैसे स्वयं महा हानि उठाते हैं, उसी प्रकार धर्म समाज के लिए भी महा हानिकारक सिद्ध होते हैं। इस हानि से हर अधिकारी आत्मा को बचने की आवश्यकता है।

2) निन्दा का महा नीच भाव :- जैसे एक-एक भेड़ और मक्खी गन्दगी खाने में ही तृप्ति महसूस करती है, उसी प्रकार कितने ही मनुष्यों की आत्मिक प्रकृति ऐसी बिगड़ जाती है कि उन्हें दूसरों के सच्चे वा झूठे अवगुणों के सम्बन्ध में सोचने और दूसरों के पास वर्णन करने में बहुत तृप्ति अनुभव होती है। ऐसी नीच प्रकृति रखने वाले मनुष्य धर्म समाज में आकर भी कई सूरतों में इस नीच प्रकृति के कारण अपनी नीच तृप्ति करने का यत्न करते हैं, जो उनके स्वयं के लिए और समाज के लिए महा हानिकारक चीज़ है। धर्म समाज में जो जन आते हैं, वह फरिश्ते नहीं होते, वह भी भिन्न-भिन्न कमियां अपने भीतर रखते हैं, यह तो भगवान देवात्मा की शक्तियों में ही अजीब जादू है कि उनको आत्मिक पतन की हालत से निकाल कर उनके भीतर एक या दूसरे प्रकार का अति आश्चर्यजनक परिवर्तन पैदा कर दिया है। ऐसे उच्च परिवर्तन प्राप्त जनों का सम्बन्धी बनने का सौभाग्य महा सौभाग्य है। इस सौभाग्य को पाकर प्रत्येक जन का जो महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है वह यह कि एक ओर ऐसे धर्म सम्बन्धियों के सद्गुणों और उपकारों पर चिन्तन करके अपने भीतर उनके लिए श्रद्धा और कृतज्ञता

के भावों को जागृत करे और बढ़ाए और दूसरी ओर ऐसे धर्म सम्बन्धियों के सम्बन्ध में अपने भीतर जो कमी और खराबी हो उसे सामने लाकर हानि परिशोध के साधन करे। परन्तु एक-एक नादान अपने जीवन का शत्रु मनुष्य उसके विरुद्ध यह अमल करता है कि दूसरों के सच्चे वा झूठे अवगुणों को अपने सामने लाता है और दूसरों के पास वर्णन करता है। इससे अपने आप को ज़हर से भरने के साथ-साथ समाज की महा हानि का कारण भी बनता है और अपने आपको झूठ-झूठ अवगुणों से रहित और कई प्रकार के झूठे सद्गुणों से सुशोभित विश्वास करके अकड़ता रहता है। यह सारी अवस्था धर्म समाज के किसी अंग के लिए बहुत खतरनाक है। यह बात बेशक हितकर है कि हमारे किसी छोटे या बड़े धर्म सम्बन्धी में यदि कोई खराबी हो, तो उसके लिए हमदर्दी के भाव से भरकर, उसको ठीक करने का जो सम्भव हो, यत्न करना चाहिए, उसकी बुराई का साथ देने या उस पर पर्दा डालकर पाप के भागी नहीं बनना चाहिए। इस पक्ष में जो सही ईलाज है, वह यह कि अपने किसी साथी की किसी बुरी बात को समाज के किसी जिम्मेवार व्यक्ति तक (सबूत सहित) पहुँचाओ कि जिसके साथ उसके ठीक होने की सम्भावना हो सकती है। उसके विरुद्ध किसी साधारण सेवक के पास या किसी गैर-सामाजिक जन के पास उसका ज़िकर करके सिवाए अपना बेड़ा ग़रक करने और दूसरों को समाज से फाड़ने के और कोई भला परिणाम नहीं निकल सकता। जिन जनों को निन्दा की भयानक बिमारी लगी होती है, वह इस कोढ़ से जहां आप मरते रहते हैं, वहां दूसरों को भी यह भयानक कोढ लगाकर उनके पक्के दुश्मन सिद्ध होते हैं। जिन-जिन जनों को अपनी ऐसी अवस्था का बोध पाना सम्भव हो, उन्हें उसका बोध पाने और उससे मुक्त होने की अतिशय आवश्यकता है।

(श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी का एक पुराना लेख)

लालच व स्पर्धा में फर्क है, इसे समझना होगा

महाराष्ट्र के ताडोबा टाइगर रिजर्व के रास्ते में एक 70 वर्षीय अम्मा की झोपड़ीनुमा दुकान से मिले सबक को मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा, जहां मैं गरम खाखरे खाने के लिए रूका था। दो खाखरे खाने के बाद मैंने अम्मा से यूं ही कहा, 'अगर इसके साथ बढ़िया गरम चाय मिल जाती तो मजा आ जाता।' इसके बाद उन्होंने जो जवाब दिया वह न सिर्फ मेरे मुंह पर बल्कि इस धरती के हर उस इंसान के मुंह पर तमाचे जैसा था, जो लालची है।

उस बूढ़ी महिला ने कुछ दूर बनी एक झोंपड़ी की ओर इशारा किया और बोली, "अगर मैं चाय भी बेचने लगूंगी, तो वहां रहने वाले उस लड़के का क्या होगा जो चाय बेचकर अपना परिवार पालता है।' कमाल की बात है, अपने प्रतिस्पर्धी के लिए ऐसी भावना, वह भी इस दुनिया में जहां लोग अपने मतलब के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। मैं जवाब सुनकर पांच मिनट के लिए सन्न रह गया, क्योंकि मुझे मैनेजमेंट की पढाई में शामिल एक विशिष्ट शब्द 'समावेशी विकास' का इससे अच्छा उदाहरण मिल ही नहीं सकता था।

पशु व्रत के दिन पर एक उपदेश का भाग

जीवन विषयक तत्व ज्ञान की ज्योति और यज्ञ साधन के लिए योग्यता के विषय में परम पूजनीय भगवान ने फरमाया :-

पशुओं में वह बुद्धि शक्ति नहीं, जो मनुष्य में है। पशु जगत् के जीव अपनी शारीरिक रक्षा के सम्बन्ध में एक वा दूसरी चतुराई अवश्य रखते हैं, कि जो उन्हें वंश परम्परा से मिली है, परन्तु वह मनुष्य की सी विवेचना शील बुद्धि नहीं रखते। जो बुद्धि उन्नत होकर और विवेचना करने के योग्य बनकर किसी तत्व को देख सकती है, किसी को तत्ववेता बना सकती है, किसी तत्ववेता की शिक्षा को समझ वा उपलब्ध कर सकती है, वह बुद्धि पशुओं में नहीं। मनुष्य में यद्यपि यह बुद्धि आई है, तो भी वह धर्म के सूक्ष्म और उच्च तत्वों को जानना तो एक ओर, आत्मा और आत्मा के जीवन के विषय में कुछ सोचना अथवा समझना तो एक ओर, अपने स्थूल शरीर और इस स्थूल जगत् के सम्बन्ध में भी बहुत थोड़ा जानता है, और अनेक अवस्थाओं में बहुत भ्रांत मत रखता है। इसलिए आत्मा की रक्षा तो एक ओर, अभी वह शरीर की भी प्रकृत रक्षा करने के योग्य नहीं हुआ। तब ऐसा मनुष्य बुद्धि पाकर भी पशुओं की अपेक्षा जहां तक ज्ञान का सम्बन्ध है, वहां तक भी कुछ बड़ा दर्जा नहीं रखता। उसके अनन्तर जहां आन्तरिक अवस्था का सम्बन्ध है, उसके विचार से एक-एक मनुष्यात्मा पशुओं की अपेक्षा भी अब तक बहुत नीचे है। परन्तु नीचे होकर भी वह अहंकार, कुसंस्कार और कुशिक्षा के वश होकर यह नहीं जानता और नहीं समझता, कि मैं पशुओं की अपेक्षा भी नीच हूं। इसी लिए ऐसी अवस्था में मनुष्य जगत् में भी जो जन उस से ऊपर की अवस्था रखते हैं, जो जन उसका एक वा दूसरे प्रकार से उच्च हित साधन कर सकते हैं, उनको भी नहीं जानता और नहीं पहचानता अनेक बार नहीं जानना और नहीं पहचानना चाहता। तब मनुष्य की इस अवस्था को सम्मुख लाकर मनुष्यों में से वह लोग जिनकी बुद्धि कुछ सुमार्जित हुई हो, मांजी गई हो, उन्नत हुई हो, और इससे भी बढ़कर जो विद्वान होकर ऐसी अवस्था में पहुंचे हों, कि जो केवल बाह्यक एक वा दूसरे प्रकार के पदार्थों के ज्ञान को छोड़कर अपने देश वा अन्य देश के नदी नालों, पर्वत और समुद्रों आदि के ज्ञान को छोड़कर अपने जीवन के विषय में कुछ जानने के इच्छुक हो गए हों, उनका कितना बड़ा सौभाग्य है। जीवन ज्योति के मिलने से इस प्रकार के प्रश्न अवश्य उदय हो सकते है:- मैं क्या हूँ? प्रति दिन जो मैं एक वा दूसरे प्रकार की गति कर रहा हूं, यह गति क्या है? इस गति की उत्पति कहां से है? ऐसी गति मुझे जिस सम्बन्धी के साथ बांधती है, उसका फल वा परिणाम क्या? उसके लिए क्या और मेरे लिए क्या? फिर यदि यह सच हो कि मैं जिस नेचर में हूं, उसके एक वा दूसरे विभाग से जुड़ा हुआ हूं, और इसीलिए सारी नेचर से जुड़ा हुआ हूं, तो फिर प्रश्न यह है, कि इस नेचर के सम्बन्ध में मेरी गति क्या है? यदि यह नेचर एक है और मैं उसका एक अंश हूं, यदि यह कुल एक कल की न्याईं हो, और मैं उसका एक पुर्ज़ा हूं, तो फिर प्रश्न यह है, कि मैं पुर्ज़ा होकर किस तरह चलता हूं? और अपनी गति से इस कल के और पुर्ज़ों के सम्बन्ध में क्या फल उत्पन्न करता हूं? फिर इस विशाल कल में जो विकासकारी महा नियम काम कर रहा है क्या

मैं उसके पहचानने के योग्य हुआ हूं? क्या मेरे भीतर कोई ऐसा भाव वर्तमान है, जिसके द्वारा मैं विकासकारी नियम का साथ देना चाहता हूँ, और जो कुछ विनाशकारी है उससे भागना चाहता हूं और यह अनुभव करता हूं, कि जो कुछ विकास के महा नियम के विरुद्ध है, उससे न मेरा भला हो सकता है, न किसी और का? किसी मनुष्य ने कितनी ही विद्या पढ़ी हो, कितना ही उसने विज्ञान अर्थात् Science सीखा हो, कैसा ही माननीय हो, शासन विषयक कोई उच्च पद रखता हो, हाकिम हो, धनी हो, किन्तु यदि वह जीवन रखकर जीवनधारी होकर अपने जीवन के सम्बन्ध में कुछ भी ज्योति नहीं रखता, कुछ भी प्रकृत ज्ञान नहीं रखता, तो उसकी कैसी कृपा पात्र अवस्था है! सारी नेचर में श्रेष्ट जीव कहलाकर भी इस महा सम्पद और जीवन ज्योति से वंचित होकर केवल यही नहीं, कि वह सांसारिक पदार्थों को पाकर भी अपने आप को नाश से नहीं बचा सकता, और इस वा उस मत का अवलम्बी कहलाकर भी नाना प्रकार के पापों से, नाना प्रकार की अधोगति दायक अवस्था से अपनी रक्षा नहीं कर सकता, किन्तु किसी प्रकार भी उसके महा भयानक और अति दुखदाई और विनाशकारी परिणाम से उद्धार नहीं पा सकता। इसलिए वह जन धन्य हैं, जिनको इस संसार में प्रगट होकर जीवन ज्योति के स्रोत से जुड़ने का अधिकार मिला हो, जिनको इस संसार में विविध प्रकार की अवस्था रखने वाले मनुष्यों की तुलना में सबसे मूल्यवान और सबसे महान जीवन ज्योति के लाभ करने का अवसर मिला हो। मुझे नहीं मालूम, कि तुम में से कितने जन ऐसे हैं, जिन पर ऐसे अमूल्य ज्ञान की महिमा प्रकाशित हुई है; और कितने जन ऐसे हैं, कि जो ऐसे ज्ञान को पाकर जो कुछ शुभ हो, जो कुछ विकासकारी हो (और जो कुछ विकासकारी है, याद रखो वही शुभ है) उसके लिए आकांक्षी बन गए हैं। और जो कुछ अशुभ हो, विनाशकारी हो (और याद रखो कि जो कुछ विनाशकारी है वही अशुभ है) उससे बचने वा भयभीत होने का भाव रखते हैं। स्मरण रखो, कि जब तक शुभ के लिए आकांक्षी न हो, जो कुछ अशुभ है, उसके त्याग के लिए सच्ची इच्छा उत्पन्न न हो, तब तक ऐसे जीवन दाता के साथ सम्बन्ध रखकर भी तुम विविध प्रकार के यज्ञों के (जिन यज्ञों के साधन से ही शुभ आता है और अशुभ जाता है, और जिन यज्ञों के साधन से ही जीवन उच्च गति प्राप्त होता है और नीच गति से बचता है) साधन के योग्य भी नहीं हो सकते। इसलिए यज्ञ करता रहे और यज्ञ विषयक आदेशों को भी कोई सुनता वा पढ़ता रहे, तो भी यदि उसमें अपनी योग्यता कुछ न हो, तो कल्याण नहीं होता। इसीलिए हम देखते हैं, कि ज्योति अपना काम करना चाहती है, शक्ति अपना काम करना चाहती है, ज्योति और शक्ति के भण्डार अपनी ज्योति और शक्ति का दान भी करना चाहते हैं, तो भी कितने आत्मा ऐसी अवस्था में हैं, कि जो ऐसी ज्योति लाभ नहीं कर सकते, और ऐसी शक्ति से अपने आत्मा के भीतर कोई उच्च परिवर्तन नहीं देख सकते। ऐसा हो कि तुम में से जिनके भीतर जीवन विषयक तत्व ज्ञान की ज्योति प्रवेश कर गई है, जिनके भीतर जीवन दाता की शक्ति से कुछ उच्च बोध जाग्रत हो चुके है, जिनके भीतर शुभ के लिए प्रकृत आकांक्षा उत्पन्न हो चुकी है, वह शुभ के इच्छुक हो कर प्रत्येक साधन से अपनी अवस्था के अनुसार शुभ लाभ करने के योग्य हों।

(जीवन पथ, आश्विन 1958 वि)

मनुष्य की परम आवश्यकता को पूरा करने वाले सच्चे नेता

प्रश्न - आपने देव ज्याति दाता भगवान देवात्मा को ही एक मात्र सत्य देव अर्थात सच्चे उपास्य देव और परम गुरु के रूप में प्रकाश किया है। और वह इस बात को लेकर, कि देव ज्योति दाता वह और केवल वही हैं। क्योंकि बिना देव ज्योति के आत्मिक जगत खुलता नहीं, इसलिए आत्मिक जगत में प्रवेश की आकांक्षा रखने वाले हर एक अधिकारी मनुष्य के लिए यह परम आवश्यक है, कि वह भगवान देवात्मा की शरण ले। क्या यही एक जरूरत है कि जिसके पूरा करने के लिए हमें सच्चे रहबर की जरूरत है?

उत्तर - आत्मा के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान पाने के लिए भगवान देवात्मा का दरबार एक ही दरबार है, जो इस दरबार से निकलेगा, वह केवल यही नहीं, कि आत्म अन्धकार के हवाले हो जाएगा किन्तु नीच जीवन से मोक्ष और उच्च जीवन में विकास से भी वंचित रहेगा, क्योंकि भगवान देवात्मा आत्म मोक्ष दाता और विकास कर्ता भी है।

प्रश्न-वह किस प्रकार?

उत्तर-इसके बारे में आपको गम्भीर चित्त होकर कुछ सच्चाईयों का दर्शन करना चाहिए, जो यह सत्य हैं :-

(1) पहला सत्य यह है कि मनुष्यात्मा अपने भीतर जिस प्रकार के भाव रखता है, उन्हीं के अनुसार वह अपनी चिन्ता और अपने अन्य कार्य करता है और जो जो भाव नहीं रखता, उनके साथ सम्बन्ध रखने वाली चिन्ताएं और क्रियाएं भी नहीं करता और नहीं कर सकता।

(2) सारा मनुष्य मात्र सुखार्थी प्रकृति रखने के कारण नीच रागों और नीच घृणाओं में बुरी तरह फंसा हुआ है और इन नीच शक्तियों के अधीन होकर वह नाना प्रकार की नीच गतियां ग्रहण करता है, जिन नीच गतियों के कारण वह अपनी और अपने साथ सम्बन्ध रखने वाले सब वजूदों की हानियां करता है। अर्थात् वह हानिकारक बन जाता है। करोड़ों जन अपनी इस प्रकृति के कारण हिंसक बने हुए हैं।

(3) इन नीच रागों और नीच घृणाओं की दासत्व के कारण लोग असंख्य प्रकार के पाप करते हैं। ऐसा कोई पाप नहीं, जो मनुष्य अपनी सुखार्थी प्रकृति के कारण नहीं करता, इसलिए पापों का जो बाजार गर्म है, उनके मूल कारण मनुष्यों की नीच भाव शक्तियां हैं, जिनको हम नीच राग और नीच घृणाएं कहते हैं।

(4) मनुष्य अपने ऐसे ही नीच भावों के कारण असत्य और अशुभ को ग्रहण करता है। झूठ और बुराईयों का पक्षपाती हो जाता है। अपनी और औरों की झूठी महिमा गाता है, झूठी कथाएं रचता हैं, झूठे मुकदमें लड़ता है, झूठे कागज बनाता है, औरों पर झूठे दोष और अपराध लगाता है, अपने किसी सच्चे दोष से बचने के लिए झूठे गवाह खड़े कर लेता है, अपनी ईर्ष्या को तृप्त करने के लिए किसी की सच्ची प्रशंसा भी नहीं सुन सकता, और इसलिए उसकी झूठी निन्दा करता है, आदि आदि। दुनियां में असंख्य प्रकार की मिथ्याओं का राज है, और झूठ का दौर है, इन सबका मूल कारण भी मनुष्य के यही नीच भाव हैं।

(5) जिस स्वतन्त्रता का मनुष्य प्रेमी बना हुआ है, उस स्वतन्त्रता को भी करोड़ों जन खो बैठते हैं, अगर यह कहा जाए कि आत्म स्वतन्त्रता मनुष्य को नसीब ही नहीं, तो यह असत्य न होगा। मनुष्य तो जिस वजूद या जिस स्वार्थ से सुख पाता है, उसका दास हो जाता है। घर के पदार्थो के साथ बन्ध जाता है, अपनी स्त्री और बच्चों के साथ बन्ध जाता है, अपने मिथ्या

से मिथ्या विश्वास के साथ बन्ध जाता है, अपने दोस्तों या मित्रों के साथ बन्ध जाता है, अपनी समाज और सोसाईटी के साथ बन्ध जाता है, अपने भाई बहिनों के साथ बन्ध जाता है, इन्हीं सब बन्धनों से बन्ध कर वह अपनी स्वतन्त्रता को खो देता है। उनके सम्बन्ध में खौफनाक पक्षपात के अत्यन्त भयानक भूत को अपने हृदय का मालिक बना देता है। जहां एक ओर उनकी जुदाई से आघात खाकर कई बार मृत्यु के हवाले हो जाता है, और अनुचित दुःखों का शिकार हो जाता है, वहां दूसरी ओर वह इस भयानक पक्षपात के कारण नाना सम्बन्धों में भयानक खून तक कर देता है।

(6) मनुष्य अपने नीच भावों के वशीभूत हो कर सच्चाई और भलाई का भी शत्रु हो जाता है, इसलिए आत्मिक सत्य ज्ञान का दुश्मन बन जाता है, और आत्म अज्ञानता और अन्धता में ही संतुष्ट रहता है और इस अन्धता से उत्पन्न हुई कई प्रकार की हानियों का शिकार हो जाता है। ऐसे करोड़ों मनुष्य डरते हैं तो सच्चाई से, और तृप्ति पाते हैं, तो झूठ और अन्धता में। अब अगर आत्म अज्ञानता का भयानक रूप किसी के सम्मुख हो तो वह उससे डरेगा, परन्तु यह अभागे और नीच भावों के दास जन सत्य ज्ञान से डरते हैं।

(7) इन्हीं नीच भावों के कारण करोड़ों मनुष्य उल्टा दृष्टा बने हुए है। वह झूठ को सच और सच को झूठ मानते हैं और नेकी की बदी और बदी को नेकी समझते हैं, इसलिए वह खौफनाक रूप से आत्म रोगी बन जाते हैं। इन नीच भावों के वशीभूत होकर मनुष्य जो सब से बड़ी हानि उठाता है, वह यह है कि वह सत्य और हित को ग्रहण करने की सामर्थ्य को खोता जाता है, और असत्य और अहित का मुकाबला करने की सामर्थ्य खो देता है, इसलिए वह आत्म कल्याण का या यह कहो कि जीवन के कल्याण का सारा मार्ग ही बन्द कर देता है। अब यदि आप इन सच्चाईयों पर विचार करें, तो आप समझ सकेंगे कि हम मनुष्यों को आत्मा के सम्बन्ध में अज्ञानी अन्धे रोगी और दुर्बल क्यों बताते हैं?

प्रश्न- अब अगर मनुष्य की यही प्रकृति है, तो क्या ऐसा मनुष्य कोई हितकर गति भी कर सकता है?

उत्तर - केवल इस प्रकार की प्रकृति रखकर मनुष्य कोई आत्मिक उच्च गति ग्रहण नहीं कर सकता। इन अदना वजूदों में भी कोई कोई वजूद नाम या झूठे संस्कार के वश होकर जो दान पुण्य करते हैं, उससे भलाई तो अवश्य आती है, परन्तु कुल भलाई ऐसा दान देने वाले मनुष्य अपने दया भाव से नहीं करते। इतना सच है, कि करोड़ों नीच प्रकृति रखने वाले जनों में से कुछ ऐसे जन भी पाए जाते हैं, कि जो कोई न कोई उच्च या सात्विक भाव रखते हैं। ऐसे मनुष्य अपने सात्विक भावों से परिचालित होकर हित उत्पादक गति ग्रहण कर लेते हैं। परन्तु जो करोड़ों मनुष्य इन भावों से भी विहीन है, वह तो हानिकारक गतियों में ही रात दिन अपना जीवन यात्रा पूरी करते हैं।

प्रश्न- क्या इनमें करोड़ों मनुष्य शामिल हैं, जो विद्वान कहलाते है। पण्डित, दिगम्बर, योगी, मौलवी, काजी, पादरी और फूंगी आदि कहलाते है?

उत्तर- जी हां, जिस प्रकार बड़े से बड़ा पशु भी छोटे पशुओं की भान्ति पशु प्रकृति का ही प्रकाश करता है, ठीक उसी प्रकार नीच भाव रखने वाले बड़े बड़े विद्वान या 'धर्म' प्रचारक भी साधारण मनुष्यों की भांति अपनी प्रकृति से हानिकारक फल उत्पन्न करने से नहीं रुक सकते। वह भी सारे के सारे आत्म आज्ञानता में ग्रस्त हैं।

प्रश्न- क्या वह विद्वान और प्रचारक मनुष्य आत्मिक

ज्योति की अभिलाषा नहीं रखते?

उत्तर - उनके सम्मुख जब देव ज्योति का तत्व ही नहीं खुला तब वह उसकी अभिलाषा ही क्यों करें।

प्रश्न - भला यह देव ज्योति मनुष्यों के हृदयों में पहुंच कर क्या कार्य करती है?

उत्तर - यह महान और सर्वोच्च देव ज्योति अधिकारी हृदयों में प्रवेश करके उनकी नीच गतियों को हानिकारक और घृणित रूप में दिखाती है। यह देव ज्योति ऐसी हानिकारक और घृणित गति से निकलने के लिए उनके हृदय में प्रेरणा उत्पन्न करती है, यह अति महान और उच्च देव ज्योति एक एक अधिकारी हृदय को उच्च भाव का सौन्दर्य दिखाती है। यह महा दुर्लभ देव ज्योति उच्च भाव का सुन्दर रूप दिखाकर उस हृदय को इस भाव के पाने के लिए इच्छुक बना देती है। यह इच्छा या अभिलाषा एक बहुत ही गैर मामूली प्रेरणा या तहरीक है। इस आकांक्षा से परिचालित होकर एक एक अधिकारी मनुष्य उस देव तेज को पाता है, जिससे उसकी यह आकांक्षा पूर्ण होती है, वह एक ओर अपनी नीच प्रकृति से सच्ची मोक्ष लाभ करता है और दूसरी ओर वह उच्च भाव से उन्नति पाता है।

प्रश्न - यह देव ज्योति और देव तेज जो महा दुर्लभ रत्न है?

उत्तर - जी हां। यह तो मनुष्य के लिए परम आवश्यक लाभ हैं।

प्रश्न - इन्हीं देव ज्योति और देव तेज सम्पन्न किरणों को आप किसी और नाम से भी स्मरण करते हैं?

उत्तर - जी हां। हम इनको देव प्रभाव कहते हैं।

प्रश्न - देव प्रभावों से आप का क्या अभिप्राय है?

उत्तर - देव प्रभाव वह असर हैं, कि जो देवात्मा की देव प्रकृति से उसी प्रकार निकलते हैं, जिस प्रकार नीच प्रभाव नीच प्रकृति रखने वालों से निकलते हैं।

प्रश्न - क्या आप की यह मुराद है, कि प्रत्येक मनुष्य से प्रभाव निकलते हैं?

उत्तर - जी हां। जहां शक्ति है, वहां ही उसका कार्य विद्यमान है। मनुष्यात्मा शक्तिमय है, इसलिए हर समय उसके अस्तित्व में हलचल जारी है। यह हलचल उस अस्तित्व से असर या प्रभाव निकालती रहती है। इन असरों को हम प्रभाव कहते हैं, जैसी मनुष्य की प्रकृति वैसी उसकी तासीरें। नीच भाव रखने वाले मनुष्यों से नीच तासीरें निकलती हैं। इसी प्रकार देवात्मा से देव तासीरें निकलती हैं।

प्रश्न - क्या यह तासीरें निकल निकल कर औरों के अस्तित्वों पर भी अपना असर रखती हैं?

उत्तर - जिस प्रकार एक एक फूलदार वृक्ष की महक दूर दूर तक पहुंचती है और घ्राण शक्ति रखने वाले मनुष्यों को सुगन्धित कर देती है और एक एक गन्दगी के टोकरे से निकली हुई बदबू दूर तक फैल कर नाक रखने वाले मनुष्यों के लिए एक मुसीबत की चीज प्रमाणित होती है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य के नीच और उच्च प्रभाव दूर - दूर तक फैल कर अपने दायरे के अन्दर आए हुए वजूदों पर अपना असर रखते हैं।

प्रश्न - क्या यह बात सच है, जैसा कि सच नजर आती है, तब तो एक एक बुरे मनुष्य के साथ रहना, उसके कमरे में निवास करना, उसी कमरे में उसके पास सो जाना या किसी बाजार या दफ्तरों में ऐसे कई नीच वजूदों के ताल्लुक में आना और उनके प्रभावों में सांस लेना बहुत ही हानिकारक है?

उत्तर - जी हां, सारी दुनिया की शारीरिक बीमारियां इतनी खतरनाक नहीं, जितने नीच जीवन धारियों के नीच प्रभाव हैं, और इस प्रकार के प्रभावों के महा हानिकारक मण्डल दुनियां में बने हुए हैं, जिस में वास करके और सांस लेकर लाखों और करोड़ों मनुष्य

आत्मिक बेसुधि की अवस्था में पहुंचते हैं और हानिकारक प्रकृति ग्रहण कर लेते हैं।

प्रश्न-तब तो उच्च संगत की मनुष्य को नितान्त आवश्यकता है?

उत्तर-जी हां! जिस प्रकार शरीर के लिए रोशनी, खुली हवा, साफ पानी और अच्छा खाना और हवा और रोशनी से भरे हुए मकानों की अत्यन्त आवश्यकता है, ठीक उसी प्रकार आत्मिक जीवन के लिए उच्च प्रभावदायक मण्डल की अत्यन्त आवश्यकता है।

प्रश्न-क्या उच्च प्रभाव और देव प्रभाव एक ही बात है?

उत्तर-नहीं, उच्च प्रभाव तो एक एक सात्विक शक्ति रखने वाले जन से भी निकल सकते हैं, परन्तु देव प्रभाव केवल देवात्मा से ही निकलते हैं। देव प्रभाव तो देव शक्तियों से ही निकल सकते हैं और देव शक्तियों का प्रकाश केवल देवात्मा में ही हुआ है।

प्रश्न-तब देव प्रभाव दायक मण्डल में किसी मनुष्य का प्रवेश करना और रहना उसके लिए बहुत बड़ा सौभाग्य है?

उत्तर-जी हां! देव प्रभाव दायक मण्डल में रहकर ही मनुष्य को देव ज्योति और देव तेज प्राप्त होता है। देव प्रभाव दायक मण्डल में रहकर ही मनुष्य के जीवन में उच्च परिवर्तन आरम्भ हो जाता है। उसके पाप झड़ने आरम्भ हो जाते हैं, उसके मिथ्या विश्वास भागना आरम्भ कर देते हैं। उसकी आंखों के सामने नाना सम्बन्धी आन खड़े होते हैं। पहली सारी उम्र के भूले हुए माता पिता उसके सामने नए रूप में खड़े हो जाते हैं। वह श्रद्धा के भाजन प्रतीत होते हैं। वह उपकारी रूप में नजर आने लगते हैं।

उनके सम्बन्ध में की हुई हानियां दुख देने लगती हैं। इसी प्रकार और नाना सम्बन्धों में भी हीनताएं और नीचताएं नजर आने लगती हैं, और ऐसे अधिकारी हृदय को दुख से भर देती हैं। और उसको हानि परिशोध की हालत में ले जाती हैं। देव प्रभाव दायक मण्डल में निवास करके एक एक अधिकारी आत्मा नीच लक्ष्यों के पीछे अपने जीवन की पूंजी को लुटी हुई देखकर अपना बहुत घाटा अनुभव करता है और यह पुकार उठता है हाय! मैंने अपना जीवन लुटाया, नीच लक्ष्यों के पीछे मैं नीच बन गया और अदना बन गया, और नाना प्रकार की नीच क्रियाएं और चिन्ताएं करके मैंने अपना आत्मिक रूप घटिया बना लिया। अब ऐसा मनुष्य धनी होकर धन में तसल्ली नहीं पाता, पदधारी होकर पद में तसल्ली नहीं पाता, अपनी नीच बिरादरी का मुखिया होकर उसमें तृप्ति नहीं पाता, वह तो भगवान् देवात्मा के दरबार में तुच्छ से तुच्छ सेवा का अधिकार पाकर भी फूला नहीं समाता, देव समाज के मन्दिर में झाड़ू देकर जीवन रस पाता है, साधन की तैयारी करके गद गद हो जाता है। आए हुए सत्संगियों की सेवा करके खुशी से भर जाता है। भगवान देवात्मा के कार्य के लिए धन देकर अपने आपको धनी समझता है, अपनी कीमती ताकतों को भगवान देवात्मा के कार्य में भेंट करके अपने आपको धनी समझता है, भगवान देवात्मा के कार्य में अपना सब कुछ देकर भी सन्तुष्ट नहीं होता और वह बार बार यही प्रकाश करता है कि कुछ और हो तो मैं दे दूं। मैं ऐसे सतगुरु की क्या सेवा कर सकता हूं। मैं ऐसे सतगरु का क्या ऋण परिशोध कर सकता हूं? कुछ भी नहीं कर सकता।

प्रश्न-क्या हर एक देव समाजी ऐसा हो जाता है?

उत्तर-जी नहीं!

प्रश्न-वह क्यों नहीं?

उत्तर-वह इसलिए नहीं, कि हर एक जन हर एक तरह की योग्यता नहीं रखता। अभिलाषा के साथ योग्यता की भी अत्यन्त आवश्यकता है।

मेरे श्रद्धेय दादा जी और मेरी श्रद्धेय बड़ी बुआ जी

मेरे बहुत बड़े सौभाग्य कि अपनी लगभग 74 वर्ष की आयु में मुझे अपने निज के साधनों में परम पूजनीय भगवान देवात्मा की अपार कृपा से उनकी देव ज्योति में अपने श्रद्धेय दादा जी और अपनी बड़ी बुआ डॉक्टर जीवन लता जी का सुंदर, सेवाकारी, पवित्र और उपकारी रूप नज़र आया।

मेरी बुआ जी के जीवन में सुंदरता कैसे आई, उसे जानने के लिए पाठक गण पहले मेरे विशेष श्रद्धा के योग्य दादा श्रीमान भाई देव बल जी तथा दादी श्रीमति किशन कौर जी के विषय में कुछ जानना चाहेंगे जिन्होंने मेरी सुंदर जीवनधारी बुआ जी को जन्म दिया, उनका देव समाज के वातावरण में पालन पोषण किया और शिक्षा दी। मेरे दादा जी फरवरी सन 1870 में पैदा हुए तथा वे 18 वर्ष की आयु में ही देव समाज के शुरू जमाने में भगवान के श्री चरणों से बहुत गहराई से जुड़ चुके थे और आखिरी उम्र तक बड़े चाव भाव के साथ देव समाज के प्रचार विभाग तथा धन विभाग के कामों में भागी होते रहे थे। उनकी उसी 18 वर्ष की आयु में श्रद्धेया डॉक्टर कुमारी प्रेम देवी जी डॉक्टरी की परीक्षा में पंजाब भर में प्रथम रहीं थीं और उन्होंने दुनियावी प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करके भगवान के अद्वितीय धर्म कार्य में अपना जीवन भेंट करने का फैसला कर लिया था। यही श्रद्धेया जी भगवान की अनुरागी शिष्या थीं। उनके जीवन के उच्च प्रभाव मेरे दादा जी के ऊपर भी ज़ोरदार ढंग से पड़े। श्रद्धेया जी जब धर्म प्रचार के लिए बाहर के स्थानों पर जातीं तो इन्हें भी उनके चरणों के साथ उनकी सहायता के लिए भेजा जाता था। मेरे इन्हीं दादा जी को जब देव धर्म के विरोधियों ने लाहौर में बीच बाज़ार लाठियां मारकर लहू लुहान कर दिया था, तब श्रद्धेया जी ने ही उनकी मरहम पट्टी की थी। भगवान के दूसरे अनुरागी शिष्य श्रद्धेय श्रीमान पंडित परमेश्वर दत्त जी अपने अंतिम दिनों में जब वह अपनी खतरनाक बीमारी के कारण मृत्यु के निकट थे, अपने शरीर की बहुत ही नाज़ुक हालत में अपनी पुस्तक उपकार माला में मेरे दादा जी के विषय में यूं लिखते हैं :

'कल की दस्तों की अधिकता को देखकर मैंने आज प्रात: काल ही दिल के जोरदार भाव से यह चाहा, कि कम से कम मेरे विशेष उपकारी साथी सेवक श्रीमान देव बल जी के बहुत बड़े उपकारों को विस्तार पूर्वक लिखूँ, परन्तु शोक है कि, मेरे इस रोगी शरीर ने मेरी यह कामना पूरी नहीं होने दी। और मेरी वर्तमान अवस्था फिर कभी मेरी इस शुभ इच्छा के पूर्ण होने की आशा भी नहीं दिलाती। बिल्कुल न लिखने से कुछ लिखना ठीक समझकर केवल इतना लिख देता हूँ, कि श्रीमान देव बल जी ने मेरी बिमारी में बहुत बड़ी सहायता की है। उन्होंने मुझे अपने घर में रखकर जहां स्वयं बहुत लगाव से मेरी सेवा की है, वहाँ अपने अन्य संबंधियों से भी मेरी सेवा करवाते रहे हैं। सन् 1905 में यद्यपि इन्होंने मुझे दो चार रोज ही अपने यहाँ मेहमान बनाया, परन्तु 1908 और 1909 में इन्होंने महीनों तक बड़े लगाव से सेवा की। मुझे आराम पहुँचाने के लिए इन्हें धन खर्चना पड़ा तो वह खर्चा। अपनी दुकान का हर्ज करके भी मेरे लिए समय देना पड़ा तो दिया। दिन और रात के समय भी जब कभी इन्हें अपना आराम छोडना पड़ा तो उसे छोड़ा। मैंने उपरोक्त पंक्तियों को जब लिखना आरंभ किया तब मेरी छाती में बाईं ओर सख्त दर्द हो रहा था। मैंने लिखना छोड़कर पहले कुछ देर धूप सेंकी। फायदा न होने पर दवाई की मालिश

करवाई। मालिश के थोड़ी देर बाद ही ज़ोर से खांसी होने और कफ़ निकलने लगी, थूक में खून आने लगा। कफ़ के बाद मुंह धोया, और छाती के दर्द में ही कड़ा दिल करके लिखने बैठा हूँ। मेरे लिए कभी रात में, कभी बारिश में और कभी पैदल भी सफर करना पड़ा तो श्रीमान देव बल जी ने उसे किया। कभी अपने पास आदमी रखने की मुझे ज़रूरत हुई तो अपने आदमी से ज़रूरी काम छुड़ाकर उसे मेरे पास रखा, इसी प्रकार उन्हें मेरे लिए और जो जो त्याग करने पड़े, वह उन्होंने सब किए।

श्रीमान देव बल जी की एक सेवा तो खासकर वर्णननीय है। पहले पहले कुछ काल तक एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाकर रहने से मुझे थोड़ा सा फायदा हुआ करता था। बीमार होकर कहीं मैं मर न जाऊँ तो समाज की तरफ से उस जन पर कि जिसने मुझे सफर करने की सलाह दी हो, या मुझे अपने साथ लेकर सफर कराया हो, कहीं यह आक्षेप न लगे कि उसने मेरी रक्षा के स्थान पर मुझे नुकसान पहुंचाया है, इस बहुत बड़े कलंक का भय होने पर भी श्रीमान देव बल जी ने मेरे स्वास्थ्य को फायदा पहुँचाने के हित भाव से भरकर बहुत बड़ी हिम्मत की, और बहुत सी दूर दूर किन्तु साफ हवादार जगहों में पहुंचाने के लिए, मेरे सफर के कई प्रकार के खर्च के करने में उन्होंने धन खर्च करने में बिल्कुल संकोच नहीं किया और सफर में भी शुश्रूषा बहुत उत्साह से की, और अपना बहुत सा आराम और कई बार अपनी कमाई का फायदा भी छोड़ा। मुझे अत्यंत शोक है कि श्रीमान देव बल जी से मैंने जिस जिस प्रकार की सेवाएँ पाई हैं, उनके यहाँ रहकर नाना प्रकार के आराम पाए हैं, उनसे अन्य कई प्रकार के बहुत से लाभ उठाए हैं, उन सबको संक्षिप्त रूप से भी लिखने की मुझ में अब हिम्मत नहीं रही। ऐसे शुभाकांक्षी और उपकारी साथी को बार बार धन्यवाद देने के भिन्न मेरे पास अब और कोई उपाय भी नहीं रहा। ऐसा हो कि जैसे उन्होंने मुझे हर तरह की मदद पहुंचाने की चेष्ठा की है वैसे ही उन्हें भी ऐसे अनुकूल सामान प्राप्त हों कि उनका, उनके परिवार, और अन्य संबंधियों का अधिक से अधिक कल्याण हो, और यदि संभव हो तो मुझे भी उनके शुभ साधन में सहाय करने का अवसर प्राप्त हो।"

मेरे श्रद्धेय दादा जी देव समाज के व्रती कर्मचारी श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी और उच्च कोटी के पुराने कर्मचारी श्रीमान भाई मोहन देव जी इत्यादि महान हस्तियों के साथ गुरु मिशन का काम करते रहे थे। मेरे दादा जी की एक विशेष बात यह रही कि उन्होंने भगवान के श्री चरणों में आने के बाद के अपने पूरे जीवन काल में देव प्रभाव दायक सत्संगों, विकासालय के अधिवेशनों इत्यादि में आत्मिक खुराक और आत्मा के विकास के लिए पहुँचना बहुत आवश्यक बोध किया। हमेशा महोत्सव के अति कल्याणकारी अवसर पर अपने परिवार सहित पहुँचना जरूरी समझा और किसी भी महोत्सव के अवसर से अनुपस्थित नहीं हुए चाहे अनेक बार कोई ज़रूरी काम आ जाए या फ्रंटिएर के दूर दराज़ इलाकों से उन्हें लाहौर आना पड़े या कैसी भी आर्थिक कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े। हम भगवान के सेवकों में से कितने हैं जो मरते दम तक ऐसा कर पाएंगे। मेरा पाठकों से अनुरोध रहेगा कि वे उनका अत्यंत प्रेरणा दायक जीवन चरित्र अवश्य पढ़ें जो कि हमारे यहाँ "भाई देव बल जी" शीर्षक से उपलब्ध है।

मेरी दादी जी के श्रद्धेय पिता श्रीमान चंदू लाल जी देव समाज के शुरू ज़माने के ही पहले के उन पटवारियों में से थे जिन्होंने भगवान के अद्वितीय देव प्रभाव पाकर रिश्वत लेना पूरी तरह से छोड़ दिया था, डयूटी के समय के बाद कपास के बेलन बेल बेल कर अपने बड़े परिवार का खर्च चलाना सहर्ष स्वीकार

किया था। उन्हीं के जीवन की ऐतिहासिक घटना है कि उन्होंने दीवाली के अवसर पर रिश्वत में आने वाली मिठाइयों को कबूल न करके मिठाई की जगह अपने परिवार को गुड़ खिलाकार अपने जीवन से भगवान देवात्मा के अलौकिक देव प्रभावों द्वारा आए उच्च परिवर्तन के फलस्वरूप अपनी उच्च दर्जे की ईमानदारी और भगवान के संबंध में अपनी वफादारी का एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत किया था।

हमारे परिवार के लिए यह बहुत गौरव की बात है कि देव समाज स्थापन होने के बाद देव समाज अनुष्ठान विधि से सबसे पहला विवाह मेरे श्रद्धेय दादा जी और दादी जी के बीच सन 1897 में हुआ था।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी मेरे दादा जी और दादी जी के जीवनों में विशेष दिलचस्पी रखते थे। श्रीमान जी ने चाहा कि विवाह के बाद मेरी दादी जी देव समाज बालिका विद्यालय फ़ीरोज़पुर (जो तभी नया नया खुला था) में शिक्षा प्राप्त करें। मेरे श्रद्धेय दादा जी ने अपने इन उपकारी और हितकारी श्रीमान जी की शुभ इच्छा को पूरा किया और मेरी दादी जी लगभग 7 वर्ष तक वहाँ रहकर शिक्षा प्राप्त करती रहीं, छोटी कक्षा की छात्राओं को शिक्षित करने का काम भी करती रहीं और साथ साथ फ़ीरोजपुर स्थित देव समाज धर्म विकासालय की उच्च संगत से लाभ उठाती रहीं। इसके बाद भी जब भी उपरोक्त श्रीमान जी ने आज्ञा दी, वह उनकी धर्म संगत में पहुँचती रही।

मेरी बुआ जी का जन्म 30 मार्च 1905 ई. को कैम्बल्पुर (अब पाकिस्तान) में मेरे श्रद्धेय दादा श्रीमान भाई देव बल जी तथा दादी श्रीमति किशन कौर जी के घर में हुआ।

उस ज़माने में जब लड़कियों को पैदा होने से पहले या फौरन बाद मार दिया जाता था, मेरे दादा जी ने इनको जन्म पर देव समाज बालिका विद्यालय को तार देकर सूचित कर दिया कि उनके विद्यालय की भावी छात्रा का जन्म हुआ है और वह छ: वर्ष बाद उनके पास पहुँच जाएंगी। मेरी इन बुआ जी ने वहीं से अपनी स्कूली शिक्षा ली। वहाँ से मैट्रिक पास करके इन्होंने Lady Harding Medical College, देहली से सन 1930 में M.B.B.S. की परीक्षा पास की जिसके बाद उन्हें सरकारी वजीफा देकर इंग्लैंड भेजा गया। सन 1941 से लेकर रिटायर होने तक वह अत्यधिक सेवा भाव से भरकर Mrs. Girdhar Lal Maternity Hospital, Ajmeri Gate, Delhi में Medical Superintendent रही हैं। उनके इस सरकारी हस्पताल की कोठी में हम बचपन में अपनी गर्मी की छुट्टियाँ बिताते रहे हैं और उनसे और अपनी दादी जी से अनेक सेवाएँ पाते रहे हैं। कुछ वर्ष पहले पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति General Parvez Musharraf की माता जी भारत आयीं थीं और उन्होंने उसी हस्पताल का दौरा करने की इच्छा जताई और फिर इस हस्पताल का दौरा किया और मेरी इन्हीं बुआ जी को विशेष रूप से General Musharraf और उनके भाई के जन्म के समय उनकी विशेष सेवाओं और उनकी मेहरबानियों के लिए याद किया। यह खबर टाइम्स ऑफ इंडिया में छपी थी और मुझे उसे पढ़ने का अवसर मिला था। इस प्रकार से भगवान के देव प्रभावों को पाकर उन्होंने अनगिनत स्त्रियों और नवजात शिशुओं की अनथक सेवा की है।

मेरी इन बुआ जी की एक बहुत सुंदर विशेषता रही है कि उन्होंने आयु पर्यंत अविवाहिता रहकर न केवल अपने सरल जीवन से पवित्रता की एक अनोखी मिसाल कायम की, अपितु अपने माता पिता जी की अंतिम क्षणों तक श्रवण कुमार की तरह से सेवा की। मेरे श्रद्धेय दादा जी की 1944 में मृत्यु के बाद से मेरी श्रद्धेय दादी जी अपने तीन बेटे होने के बावजूद सदा मेरी बुआ जी के पास ही रहीं। इसके अतिरिक्त मेरी इन बुआ जी ने अपने सभी भाई बहिनों

की उच्च शिक्षा में विशेष योगदान दिया। यदि उन्होंने मेरे श्रद्धेय पिता जी को M.A. तक की पढ़ाई में सहायता न की होती तो क्या ऐसा संभव हो पाता कि आज हम चारों बहिन भाई और हमारा भांजा भी Ph.D. करके अपने पाँवों पर खड़े हो सकते और समाज में मान सम्मान के योग्य हो पाते। स्पष्ट रूप से इनमें उनका विशेष योगदान है। हमारा परिवार बहुत बड़ी गलती करेगा यदि हम कभी भी उनके इस उपकार को भूल जाएँ। उनके अंदर विशुद्ध सेवा के भाव की एक मिसाल यह भी है कि इन्होंने एक अनाथ बच्ची को अपनाया जिन्हें हम प्यार से लीला बुआ पुकारा करते थे। उनका देव समाज के साथ सदा ही विशेष संबंध रहा। मेरी दादी जी के साथ वे देहली में जहां भी सत्संग होता वहाँ खुशी खुशी शामिल होकर लाभ उठाती थीं। मेरी बुआ जी की देहली में पूसा रोड में एक बड़ी कोठी थी। अपनी मृत्यु पर इन्होंने अपनी इस कोठी की एक मंज़िल देव समाज को दान कर दी तथा दूसरी मंज़िल इन्हीं adopted लीला बुआ को दे दी थी। इसके अतिरिक्त उनकी देहली में ओखला स्थित लगभग 2 एकड़ की ज़मीन थी जिसे भी सन् 1970 के लगभग उन्होंने देव समाज के स्कूल के लिए दान कर दिया था जहां देव समाज मॉडर्न स्कूल स्थापित किया गया। मुझे पूरा विश्वास है कि वे परलोक में उच्च आत्माओं की संगत में उच्च लोकों में विराजमान होंगी। ऐसी "हैं" मेरी बड़ी अुआ जी। इसी लिए परलोक वासी उच्च आत्माओं के इस लेख को लिखते अपनी ऐसी बुआ जी के गुणों और मेहरबानियों को स्मरण करके अनेक बार मेरे आँसू छलक आए हैं।

(डाक्टर विनोद खेड़ा)

बाकि पृष्ठ 20

सोकर उठती है और सबसे बाद में सोती है। संडे के दिन, जब बाकी पूरा परिवार छुट्टी मना रहा होता है, मां डबल मेहनत करती है, लेकिन मां का वर्किंग स्टेटस है कि वह कुछ नहीं करती। दिन भर घर को घर बनाने, रोटी पकाने, बच्चों को पालने, उनको पढ़ाने, सिखाने, इंसान बनाने और घर के सब लोगों की देखभाल करने का स्त्री का श्रम कहीं दर्ज नहीं होता। न उसका वेतन मिलता है और न कोई आदर। कहीं ज्यादा काम की या थकान की शिकायत कर दे तो सुनने को मिलता है, 'तुम करती क्या हो दिन भर'। आपके दिन भर की मेहनत के बाद अगर बॉस कह दे कि आपने किया क्या है, तो आप किस कदर अपमानित महसूस करेंगे। औरतें भी करती हैं, बस कह नहीं पातीं। कानून की किताबों में उस श्रम का न कहीं जिक्र है, न उससे जुड़ा कोई कानूनी अधिकार।

कुछ साल पहले संसद में भी यह सवाल उठा था। औरतों के घरेलू श्रम की जीडीपी से जोड़ने का सवाल। उस श्रम की कीमत का सवाल। दुनिया की कोई मेहनत मुफ्त की मेहनत नहीं होनी चाहिए। उसे उसका मूल्य मिलना चाहिए। सवाल आया और चला गया। ज्यादा विचार नहीं हुआ इस पर, क्योंकि देश के लिए ये इतना जरूरी सवाल नहीं था शायद। आपके लिए भी नहीं है शायद। लेकिन अगली बार जब आप अपनी पत्नी या अपनी मां से कहें कि तुम दिन भर करती क्या हो, तो उस श्रम के बारे में जरूर सोचिएगा जिसने आपको इस लायक बनाया कि आप दुनिया में सिर उठाकर जी सकें। इज्जत पा सकें। औरत के श्रम का मूल्य नहीं तो कम से कम उसे उसका श्रेय तो दीजिए। उसे इज्जत दीजिए।

सेवक उत्सव

इस वर्ष सेवक उत्सव देव समाज के ऐतिहासिक स्थान कल्याण में बड़े श्रद्धा और चाव - भाव से मनाया गया। 15 जुलाई से 17 जुलाई दोपहर तक इस उत्सव की कुल 5 सभाएं हुई। इस उत्सव से कुछ दिन पहले श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने गोनियाना के धर्म सम्बन्धियों को उत्सव में पहुंच कर योगदान देने और लाभ उठाने के लिए प्रेरणा की। 11 जुलाई से 13 जुलाई तक उक्त श्रीमान जी मल्लेकां जिला सिरसा में 3 दिन सत्संग सभाएं करवाने के लिए पहुँचे और सेवक उत्सव से लाभ उठाने की प्रेरणा की। कई धर्म सम्बंधियों को फोन करके उत्सव की प्रेरणा की गई। गंगानगर और पदमपुर के बुजुर्ग धर्म सम्बंधियों को बहुत ज्यादा गर्मी की वजह से, उनकी सेहत की फिक्र से नही बुलाया गया।

उत्सव में भाग लेने के लिए गोनियाना, मल्लेकां (सिरसा), भटिण्डा, गंगानगर, पदमपुर, बंगा आदि स्थानों से धर्म सम्बंधी बड़ी श्रद्धा से पधारे। बुजुर्ग साथी सेवक श्रीमान P.C. दीवान जी गर्मी में मना करने के बावजूद बड़े चाव से पहुंचे। श्रीमान डा० मुंशा सिंह जी खुद नहीं पहुंच सके पर धर्म सम्बंधियों को प्रेरणा करके पदमपुर से भेजने के लिए संग्राम करते रहे।

स्थानीय सेवकों ने सभा स्थान को बहुत जोश से सफाई और सफेदी करवाकर तैयारी किया। उससे पहले बिजली की नयी अण्डर ग्राऊण्ड फिटिंग, नयी खिड़कियां व दरवाज़े व उन पर रंग रोगन करके उन्हें बहुत सुन्दर रूप दिया।

प्रवेश सभा 15 जुलाई शाम 7 बजे श्रीमान बलबहादुर जी ने करवाई जिसमें सेवक उत्सव (देव समाज) के इस महान स्थान पर पहले भी मनाने के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। इस उत्सव की विशेषता परम पूजनीय भगवान देवात्मा की धर्म की सच्ची विज्ञानमूलक शिक्षा के बाद मुख्य रूप से उनके अमृतमय देव प्रभावों का कार्य है जो अधिकारी हृदयों को इस शुभ अवसर से प्राप्त हो सकते हैं। सभापति जी ने बताया कि भगवान देवात्मा के उच्च परिवर्तनकारी देव प्रभाव इस विश्व की सबसे अनमोल वस्तु है। सभापति जी ने सेवकी की पवित्र प्रतिज्ञाओं की महिमा भी ब्यान की। जिस समाज की पहली श्रेणी का स्तर इतना नैतिक (Moral) और आध्यात्मिक हो, उसमें शामिल होकर सेवक बनना कितना बड़ा सौभाग्य! इस सभा में गांव के 15 - 20 आम जनों के अलावा लोकल धर्म सम्बंधी और 3 नौजवान सरकारी अध्यापक भी शामिल हुए।

अगले दिन 16 जुलाई को सवेरे 8.30 बजे पहली सभा हुई। इसके परिचालक भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। इस सभा में सेवक माला के विशेष मोतियों का श्रद्धा भाव से ब्यान किया गया। श्री गौतम जी ने भजन गाने की जिम्मेवारी बड़ी श्रद्धा भाव से निभाई। इस सभा में परलोकवासी श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज व श्रीमान गुरबख्श सिंह जी के जीवनों की विशेष घटनाओं और सेवाओं का वर्णन किया गया। वर्तमान सैक्रेटरी साहब श्रीमान बलदेव सिंह जी और उनके विशेष माताजी का सम्मान भाव से योगदान का वर्णन किया गया। इस प्रकार के ब्यान से वातावरण बहुत सुन्दर बन गया। वर्तमान (सभा में शामिल) सेवक भी अपने आप कई साथियों के विशेष गुणों का ब्यान करने के लिए मजबूर हो गए। बंगा से आए खुशपाल सिंह जी ने गजसिंहपुर वासी बुजुर्ग साथी सेवक श्रीमान दुनि चन्द, उनके सुपुत्र श्रीमान खेमचन्द जी उनके एक और पारिवारिक जन की विशेष सेवाओं का ब्यान किया। श्रीमान मास्टर भाग सिंह जी ने महसूस किया कि काश उनके सुपुत्र इस स्थान पर होते। सभापति जी ने मास्टर जी के सुपुत्र के विशेष

गुणों व सेवाओं का भी वर्णन किया। ऐसा महसूस हो रहा था कि विशेष सहायता प्राप्त हो रही है।

दोपहर 3 बजे की सभा का विषय था - देव समाज के सेवकों के सम्बंध में क्यों और कैसे दूरी भी हो जाती है? अन्मेल निवारण सम्बन्धी आदेशों का पाठ और व्याख्या। श्रीमान गौतम जी गोनियाना ने विशेष तैयारी से यह सभा करवायी। उन्होंने बताया कि मनुष्य के सुख अनुराग और इनसे उत्पन्न नीच घृणाएं ही अन्मेल का मुख्य कारण हैं। उन्होंने बताया कि मुख्य तौर पर स्वार्थ, घमण्ड और घृणा इस धर्ममूलक विकासकारी सम्बंध के मूल शत्रु हैं। सत्संग, श्रद्धा, दीनता द्वारा इनकी हानियों से बचाव सम्भव है। अपनी नीच गतियों की तरफ ध्यान व उपकारियों के उपकारों का चिंतन एवं स्मरण मनुष्य को दीन बनाते हैं। इनके सुन्दर ब्यान के बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने इस पवित्र सम्बंध द्वारा पायी कुछ बरकतों का श्रद्धा भाव के साथ ब्यान किया।

रात 8.00 बजे की सभा के समय बहुत ज़ोर से बारिश हो रही थी, सब धर्म सम्बंधियों को कार के द्वारा सभा - स्थान पर पहुंचाया गया। इस सभा में लोकल साथी सेवक कम पहुंच सके। इस सभा में सभापति जी ने बताया कि दुनियां में पापाचार व मिथ्या की महा भयानक व घातक रौ जारी है। जिसके द्वारा आए दिन बहुत चिंताजनक, क्रूर, बरबादी भरे दृश्य मनुष्यता देखती है। आपसी सम्बंधों में स्वार्थ और अन्मेल के कारण नर्क छाया हुआ है। मनुष्य का यह परम सौभाग्य है कि वह परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सेवक और देव समाज का सभासद बने, जिसकी बरकतों की अजमत को पूरे तौर पर ब्यान नहीं किया जा सकता। इन्होंने फरमाया कि मिथ्या मतों की भयानक शिक्षा, मिथ्या पूजा, मिथ्या रस्में संस्कार व अनुष्ठानों से मुक्ती पहली बरकत है। आठ पापों से मुक्ति एक विशेष बांध है जो बरबादी से रोकने के लिए महां जरूरी है। इन पाक प्रतिज्ञाओं की बरकतें अनुचित दुखों संतापों तथा हानियों से रक्षा करने का कार्य करती हैं। इस पवित्र सेवक दल में शामिल होकर जीवन की सच्ची होश, सच्ची फिक्र, सच्चा संग्राम, विशेष अधिकारी जनों को प्राप्त हो जाता है। नीच भावों की गुलामी क्यों घातक है। उच्च भावों को पैदा करने का संग्राम विरले आत्माओं में पैदा हो जाता है और हुआ है। धर्म की सच्ची समझ देने वाले उच्च धर्म सम्बंधियों की विशेष सहायता और संगत प्राप्त हो जाती है। दुनियावी, सामाजिक, सदाचारक व आध्यात्मिक विकास करने वाला महा मूल्यवान, उच्च वातावरण प्राप्त करने का परम सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। सभापति जी ने अपने अन्दर आए उच्च परिवर्तन का ब्यान करते हुए फरमाया कि यह सारी बरकतें इसी महान उपकारी सेवक दल से मिली हैं।

17 जुलाई की सभा का विषय था नए सेवकों द्वारा ग्रहण प्रतिज्ञाओं का पाठ। इसके सभापति जी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। उन्होंने सेवकी की पाक प्रतिज्ञाओं की महानता का प्रभावशाली ढंग से ब्यान किया। कुछ विशेष घटनाओं का ब्यान भी किया, कि जहां विशेष धर्म सम्बंधियों ने अपनी जान की परवाह ना करके पाक प्रतिज्ञाओं की रक्षा की। इस सभा में दीवान साहब ने एक नौजवान साथी सेवक के उपकारों का ब्यान किया। सभा के अंत में 1500/- रूपये का दान प्राप्त हुआ।

[नोट :- मल्लेकां (सिरसा) की सभाओं में 600/- रूपये दान प्राप्त हुआ था] इस उत्सव में खुशपाल सिंह जी बंगा, श्रीमान बूटां सिंह जी और श्रीमान बलजीत सिंह जी विशेष सेवा करते रहे। इस बार सारे धर्मसम्बन्धी श्रीमान सभापति जी के घर ही ठहराए गए थे। सभा के आखिर में एक खास मीठे पकवान से सभी साथिओं के साथ मिल कर आनंद मनाया।

अमरीका में शुभ संग्राम

हमें अमरीका बहुत सुन्दर स्थल पर गर्मियां बिताने का अवसर मिला। वहां का बाहर का शान्त और शुद्ध वातावरण जहां शारीरिक तौर पर बहुत सुहावना था। भारत की गर्मी से राहत मिली। वहां सौभाग्य से हमारे जाने पर काफी हमारा परिवार इकट्ठा हो जाता है। बेटे का परिवार बेटी के बच्चे, और हमारी दो पोतियों की शादी हो गई है, वह अपने पतियों समेत समय समय पर आते रहे।

इसमें बेटे ने इच्छा ज़ाहिर की कि हमें यहां सभा करनी चाहिए, तो जब सब इकट्ठे होते तो श्रीमान बलदेव सिंह जी अंग्रेजी में सभा करते क्यांकि हमारी पुत्रवधु, पोता थोड़ी हिन्दी समझता है। दोनों पोतियों के पति हिन्दी नहीं समझते थे, तो साधारणतया इन विषयों पर विचार विमर्श होता रहा कि हमें नेक क्यों बनना चाहिए? उसके लिए दूसरों के प्रति Consideration दया भाव, कृतज्ञता, गुणों को देखने का यत्न करना आदि आदि बहुत से उदाहरण देकर इन विषयों को स्पष्ट किया गया और खुशी की बात है कि उसमें सबने कुछ न कुछ बोलकर भाग लिया। और हमें खुशी हुई कि हमारा पोता जो 9 वर्ष का है, हर विषय पर ध्यान देकर सुनता और बोलता भी। बहुत अच्छा वातावरण बन जाता जब सारा परिवार मिलकर यह शुभ साधन करता। गुरू की कृपा से बच्चों को समाज वा गुरू की महिमा का मोटे तौर पर पता है। देव समाज की शिक्षा को समझते भी हैं। बुरे से बुरे हालात में भी कभी गुरू और शिक्षा के विरूद्ध नहीं बोले, यही कहते हैं कि ऐसी शिक्षा कहीं नहीं है। यही कामना करते हैं कि जितना वह इस शिक्षा को अपनी योग्यता अनुसार आत्मसात करेंगे, उतना ही उनका भला है। ऐसा आर्शीवाद मिले।

सुरजीत बराड़

अपने अनुभव

पिछले दिनों अमरीका में मुझे वाशिंगटन डी. सी जाने का मौका मिला, हम वाईट हाऊस देखने गए, वहां बाहर का नज़ारा देखकर दंग रह गए। एक आदमी बड़ी सी छतरी लगाकर, लाऊड स्पीकर लगाकर ट्रंप (जो अमरीका के राष्ट्रपति है, और उसी भवन में रहते हैं) के विरुद्ध लगातार बोल रहा था, काफी अपमान जनक शब्द भी थे, जनता की शिकयतें भी थी। बहुत से जन राष्ट्रपति के विरूद्ध बैनरज़ लाकर दीवार के साथ रख रहे थे, वहां विज़टर जो सैंकड़ों की संख्या में थे, सुन रहे थे। उन्हें कोई नहीं रोक रहा था। इतनी सुरक्षा अन्दर थी परन्तु कोई सुरक्षा कर्मचारी बाहर नहीं आया, न किसी ने रोका। इस बात से हम सबको ही बहुत हैरानी हुई। हम भारत को विश्व की सबसे बड़ी डैमोक्रेसी कहते हैं, परन्तु क्या कोई प्रधानमन्त्री के निवास पर ऐसा करने का साहस कर सकता है? हमारे देश में पत्रकारिता का गला इस क़दर घोंट दिया गया है, समाचार पत्रों में, टी.वी पर वही बोला जाता है जो सरकार चाहती है। एक 2 पत्रकार जिसने सचाई बताने का प्रयास किया था, उसे गोलियों से छलनी कर दिया, बाकियों का साहस टूट गया, परन्तु ऐसे समय में भी एक आध चैनल है जो हक़ीक़त ब्यान करता है, उनका जर्नलिस्ट भी साफ कहता है कि मुझे हररोज़ धमकियां आती हैं।

यह तो चलो एक बात है कि एक 2 मनुष्य

इस हालत में पहुँच जाता है कि वह अलोचना सुनने की हालत में ही नहीं रहता, परन्तु एक और घटना ने मुझे अचम्भित कर दिया जब मैंने फोन पर पढ़ा कि 800 वर्ष पुरानी आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी ने डाक्टर मनमोहन सिंह जी के नाम पर वजीफा देना शुरू किया है। एक विद्वान मनुष्य की कीमत को दुनिया ने समझा, यह सारे भारत के लिए गर्व की बात है, परन्तु अफसोस हमारे किसी मीडिया ने इसका ज़िकर तक नहीं किया, किस क़दर दुखदाई! योग्य पुरुष देश की धरोहर होते हैं, चाहे किसी पार्टी जाति वा धर्म के हों। आज सारी सरकार में इतना विद्वान, जिनकी डिगरियों की एक लम्बी लिस्ट है, ऐसा सुयोग्य अर्थ शास्त्री एक भी नहीं है। जब सारा विश्व मन्दी के दौर से गुज़र रहा था, डाक्टर मनमोहन सिंह जी ही थे, जिन्होंने भारत को मन्दी से डूबने नहीं दिया। सब देशों ने उनका लोहा माना, उनकी योग्यता को सराहा, परन्तु हमारे देश की बदकिस्मती है कि ऐसी घटना को उजागर न करके, देशवासियों को अपने देश के योग्य पुरुष पर गर्व करने के अवसर ही नहीं दिए। जब मन्दी में विश्व गुजर रहा था, तो उन्होंने अपनी शेखी नहीं बघारी, बल्कि संजीदगी से ऐसे तरीके निकाल कर देश को न केवल उससे बचाया बल्कि और उभारा। जो ऐसे जन, चाहे वह किसी समाज में, शिक्षण संस्थानों में हों, सरकार में हों, जो देशवासी योग्यता की क़दर नहीं करते वह कभी विकास नहीं कर सकते।

संस्थानों को उच्च कोटि का बनने के लिए दो बातों की आवश्यकता है, योग्य जन और दूसरा अलोचनाओं का सामना करने का साहस। मुझे अपने जीवन की एक घटना याद आ गई। प्रतिनिधि सभा का election हुआ, बहुत से योग्य जन विशेष युक्ति के अधीन प्रतिनिधि सभा के मैंबर न बन सके। वह ऐसे जन थे जो देव समाज के काम में बहुत सहायक रहे थे और समाज के विकास में उनका बहुत बड़ा हाथ था। परन्तु उन लोगों का प्रतिनिधि सभा में चुनाव न होने के बावजूद पता नहीं किस प्रकार मैं उस जाल से बाहर निकल गई और प्रतिनिधि सभा की मैंबर बन गई। मेरी कभी इच्छा नहीं हुई, परन्तु कुछ समाज के हितकारियों ने मुझे निवेदन पत्र भरने के लिए ज़ोर दिया और मेरा प्रतिनिधि सभा के मैंबर के रूप में चुनाव हो गया। वहां का नज़ारा देखकर और समाज के बहुत से उच्च कोटि के वर्कज़ को न देखकर बहुत निराशा हुई। परन्तु मेरी उपस्थिति पहली बार हुई थी, तो मुझे प्रतिनिधि सभा का कोई अनुभव नहीं था।

और बातों के भिन्न हमारे एक माननीय कर्मचारी ने किसी का पत्र पढ़ा, जिसमें समाज के प्रबन्धकारियों की आलोचना हुई थी और दुख का प्रकाश किया कि ऐसा नहीं होना चाहिए। सुनकर मुझे बड़ी हैरानी हुई कि यह ऐसा क्यों अनुभव कर रहे हैं, यदि कोई जन प्रबन्ध में कमी देखता है, और उसे एक माननीय कौंसलर को लिखकर देता है, तो उसकी पड़ताल करने की बजाए, यह उस जन को ही ग़ल्त कह रहे हैं। मुझसे रहा नहीं गया और मैंने खड़ी होकर बोलने की आज्ञा मांगी और आज्ञा मिलने पर मैंने कहा कि क्षमा करना मेरे विचार इससे भिन्न हैं। मैं एक संस्था की हैड हूं, हमारे पास भी कई बार बिना नाम लिखे पत्र आते हैं, जिनमें शिकायतें होती हैं। मेरा यह असूल है कि उसी समय पड़ताल की जाए कि क्या यह शिकायत सही है, अगर सही है, तो फौरन उसको दूर करने के उपाय किए जाएं, यदि किसी ने ऐसे ही दोष निकालने के लिए लिखी है तो उसे Ignore किया जाए। कभी यह पता करने की भी कोशिश नहीं की कि किसने लिखी है। यह कहकर मैं बैठ गई। यह अलग बात है कि आगे से मुझे चुना नहीं गया।

परन्तु एक और माननीय कर्मचारी ने मुझे पत्र लिखकर मुबारकबाद दी कि आपने पहली बार प्रतिनिधि सभा में बोला, और कमाल का ब्यान किया, मैं आपके तर्क से बहुत प्रभावित हुआ हूं। वह पत्र अभी भी मेरे पास है।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

मेरा कहने का अर्थ यह है कि हम अलोचना को अपने ऊपर हमला क्यों समझते हैं? क्योंकि हम अपनी ग़लती मानने को तैयार नहीं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने महोत्सव के मौके पर अलोचना सभा रखी थी, ताकि समाज के प्रबन्ध में जो कमियां हैं, लोग बता सकें और उनको सुधारा जा सके।

सुरजीत बराड़

औरतों के श्रम का हिसाब होगा, इतिहास की धोखाधड़ी पकड़ी जाएगी

एक मई, यानी मजदूर दिवस। कभी रोजा लक्जमबर्ग ने कहा था, 'जिस दिन औरतों के श्रम का हिसाब होगा, इतिहास की सबसे बड़ी धोखाधड़ी पकड़ी जाएगी। हजारों वर्षों का वह अवैतनिक श्रम, जिसका न कोई क्रेडिट मिला, न मूल्य।' हम जब भी श्रम की बात करते हैं तो मर्द का ख्याल आता है। आपने भी जगह-जगह वह बोर्ड लगा देखा होगा, 'मेन एट वर्क', कहीं नहीं लिखा होता, 'वूमेन एट वर्क'। चाहे साइट पर काम कर रही मजदूर और इंजीनियर, दोनों औरतें ही क्यों न हों। काम यानी मर्दानगी की बात। श्रम यानी मर्दों का श्रम। कितने लोग जानते हैं कि ये जो पूरी दूनिया में मनाया जा रहा श्रम दिवस है, इसका श्रेय भी दरअसल औरतों को ही जाता है। इसी दिन कामगार औरतों ने काम के घंटे 8 करने के लिए लंबी समय से चल रही लड़ाई जीती थी। आज पूरी दुनिया में नौकरी के घंटे 8 हैं। लेकिन क्या कभी सोचा है कि बाहर की नौकरी के घंटे तो 8 हो गए, तनख्वाह भी सुनिश्चित हो गई, रविवार की छुट्टी भी तय रही, बाकी कैजुअल लीव, मेडिकल लीव, प्रिवलेज लीव भी। सबके लिए कानून भी बन गया, लेकिन आज भी एक नौकरी ऐसी है, जिसमें न कोई काम के घंटे निश्चित हैं, न कोई छुट्टी का दिन। न ही कोई सैलरी है और न कोई कानूनी अधिकार। यह श्रम है-घरेलू औरतों का अवैतनिक श्रम।

घरेलू श्रम करने वाली औरतों के बच्चे कहते हैं कि मेरी मां हाउस वाइफ है। उनके पति कहते हैं कि उनकी पत्नी कोई काम नहीं करती। 'पापा क्या करते है' के जवाब हमेशा गर्वीले और वजनदार होते हैं। पापा काम करते हैं, पापा का काम महत्वपूर्ण है। मां कुछ नहीं करती। हालांकि, वह घर में सबसे पहले

शेष पृष्ठ 15 पर

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts